Dr.Raman Kumar Thakur

Asstt.prof.(Guest) Department of Economics, D.B.College, jaynagar.

Class:- B.A.part-1 (Hons)paper-2nd

Date:-30-07-2020.

Topic:- भुगतान शेष सिद्धांत(The Balance of payment Theory):-

इस सिद्धांत के अनुसार मुक्त विनिमय दरों के अंतर्गत किसी राष्ट्र की मुद्रा की विनिमय दर उसके भुगतान शेष पर निर्भर करती है। अनुकूल भुगतान शेष विनिमय दर को बढ़ाता है जबकि प्रतिकूल भुगतान शेष विनिमय दर को घटाता है। इस प्रकार इस सिद्धांत का मतलब है कि विदेशी विनिमय की मांग तथा पूर्ति विनिमय दर को निर्धारित करती है।

विदेशी विनिमय की मांग भुगतान शेष के उधार खाते से उत्पन्न होती है यह मांग बाहर के राष्ट्र से खरीदी गई वस्तुओं तथा सेवाओं के बदले उसे किए भुगतान हो जा मारी तथा विदेश में किए गए निवेशो के मूल्य के बराबर होती है। विदेशी विनिमय की पूर्ति जमा खाते हैं, से उत्पन्न होती है या हमारे राष्ट्र से खरीदी गई वस्तुओं तथा सेवाओं के बदले बाहर के राष्ट्र द्वारा हमारे राष्ट्र को किए गए भुगतानो, जमा, हमें लौटाए गए ऋणो तथा हमारे राष्ट्र में किए गए निवेशो के मूल्य के बराबर होती है। यदि उधार खाता और जमा खाता बराबर हो तो भुगतान शेष संतुलित होता है।

यदि जमा राशि से उधार राशि बढ़ जाए तो भुगतान- शेष प्रतिकूल होता है । इसके विपरीत यदि उधार राशि से जमा राशि बढ जाए तो भुगतान- शेष अनुकूल होता है . जब भुगतान शेष प्रतिकूल, हो तो उसका मतलब होता है कि विदेशी करेंसी की पूर्ति से उसकी मांग अधिक है । इसके परिणाम स्वरूप विदेशी करेंसी की तुलना में घरेलू करेंसी का मूल्य विदेश में गिर जाता है और इससे विनिमय दर गिर जाती है इसके विपरीत यदि भुगतान शेष अनुकूल हो तो उसका मतलब होता है कि दी हुई विनिमय दर पर विदेशी मुद्रा की पूर्ति से विदेशी मुद्रा की मांग अधिक है इसके परिणाम स्वरूप विदेशी मुद्रा की तुलना में घरेलू मुद्रा का मूल्य विदेश में बढ़ जाता है और इसलिए विनिमय दर बढ़ जाती है।

जब प्रतिकूल भुगतान शेष की स्थिति विनिमय की दर गिरकर संतुलन विनिमय दर से नीचे चली जाती है तो निर्यात अनुकूल संतुलन विनिमय दर से ऊपर चली जाती है तो निर्यात घट जाते हैं और अनुकूल भुगतान से समाप्त हो जाता है और संतुलन विनिमय दर पुनः स्थापित हो जाती है इस प्रकार किसी भी समय विनिमय दर को विदेशी विनिमय की मांग तथा पूर्ति निर्धारित करती है जिन्हें भुगतान शेष का उधार खाता तथा जमा खाता व्यक्त करते हैं।" जब भी मांगा अथवा पूर्ति स्थितियों में कोई भी परिवर्तन होता है तो वह अपने को विनिमय कि दर में परिवर्तन के माध्यम से व्यक्त करता है और चालू विनिमय दर पर भुगतान- शेष दिन- प्रतिदिन अथवा क्षण- प्रतिक्षण संतुलित होता चलता है।"

* विनिमय दरों में परिवर्तन के कारण(Causes of Changes in the Exchange Rate):- राष्ट्रों के बीच विनिमय दर परिवर्तन इसलिए होता है कि विदेशी विनिमय बाजार में मांग अथवा पूर्ति में परिवर्तन होने के कारण राष्ट्रों के बीच विनिमय की दर में परिवर्तन होता है जो कारण मांग तथा पूर्ति परिवर्तन लाते हैं उनकी चर्चा इस प्रकार से की जा रही है:-

1) कीमतों में परिवर्तन(Changes in prices):- जब सापेक्ष कीमत स्तरों में परिवर्तन होते हैं तो विनिमय दर में बदलाव होता है।

2). निर्यातो तथा आयातो में परिवर्तन(Changes in exports and Imports):- निर्यातो तथा आयातो में होने वाले परिवर्तन भी विदेशी विनिमय की मांग तथा पूर्ति को प्रभावित करते हैं । यदि किसी राष्ट्र के निर्यात उसके आयातो से अधिक होंगे तो उसकी मुद्रा की मांग बढ़ जाएगी, और जिसके परिणाम स्वरुप विनिमय की दर उसके अनुकूल हो जाएगी, इसके विपरीत यदि निर्यातो से आयात बढ़ जाते हैं तो विदेशी करेंसी की मांग बढ़ जाएगी और विनीमय कि दर उस देश के प्रतिकूल हो जाएगी।

3) पूजी गतियां (Capital movement)

4) बैंकों का प्रभाव(Influence of Bank)

5) सट्टे का प्रभाव(Influence of Speculation)

6) स्टॉक एक्सचेंज प्रभाव (Stock exchange influence)